

राजस्थान में बाल ववाह

चर्चा में क्यों?

राजस्थान उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि राज्य में कोई भी बाल ववाह न हो और यदि ऐसे ववाह होते हैं तो ग्राम प्रधान एवं पंचायत सदस्यों को ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा।

मुख्य बिंदु:

- न्यायालय का आदेश 10 मई 2024 को [अक्षय तृतीया](#) त्योहार से पहले आया, क्योंकि राजस्थान में अक्षय तृतीया पर कई बाल ववाह संपन्न होते हैं।
- न्यायालय ने बाल ववाह को रोकने के लिये न्यायालय के हस्तक्षेप की मांग करने वाली [जस्टिस फॉर चिल्ड्रन एलायंस](#) की [जनहति याचिका \(PIL\)](#) पर सुनवाई करते हुए कहा कि [बाल ववाह प्रतषिध अधिनियम, 2006](#) के बावजूद राज्य में अभी भी बाल ववाह हो रहे हैं।
 - [बाल ववाह प्रतषिध अधिनियम, 2006](#) की धारा 11 के तहत, यदि सरपंच और पंच लापरवाही से बाल ववाह को रोकने में विफल रहते हैं तो उन्हें ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा।
- [राजस्थान पंचायती राज नयिम, 1996](#) के अनुसार बाल ववाह को प्रतषिधित करने का कर्तव्य सरपंच पर डाला गया है।

बाल ववाह प्रतषिध अधिनियम, 2006

- इस अधिनियम ने [बाल ववाह नषिध अधिनियम, 1929](#) का स्थान लिया जो ब्रिटिश काल के दौरान लागू किया गया था।
- बाल ववाह में बच्चे का तात्पर्य 21 वर्ष से कम उमर के पुरुष और 18 वर्ष से कम उमर की महिला से है।

संबंधित पहल:

- [धनलक्ष्मी योजना](#): यह बीमा कवरेज के साथ एक बालिका के लिये सशर्त नकद हस्तांतरण योजना है।
 - इसका उद्देश्य [माता-पिता को चिकित्सा खर्चों के लिये बीमा कवरेज की पेशकश](#) और लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करके समाज में [बाल ववाह की प्रथा का उन्मूलन करना](#) भी है।
- [बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ \(BBBP\)](#): इसका उद्देश्य शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा के माध्यम से लड़कियों को सशक्त बनाना तथा बाल ववाह को हतोत्साहित करना है।